कमल संदेश

ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल

विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : **100/-**

त्रि वार्षिक : **250/-**

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798

Qku (dk-) : +91(11) 23381428

QDl : +91(11) 23387887

पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय-सूची

जनादेश 2014

पूरे देश में नमो लहर नहीं, बल्कि सुनामी बन गई.................................. 7
विश्व मीडिया ने भाजपा की जीत की तारीफ की.................................. 13
दुनिया भर के नेताओं ने दी नरेंद्र मोदी को बधाई!.................................. 14
संसद के केन्द्रीय सभागार में श्री नरेन्द्र मोदी का भाषण.......................... 21
भाजपा और एनडीए के नेता चुने गए नरेंद्र मोदी.................................. 24

लेख

अबकी बार चमत्कार
– **बलबीर पुंज**.. 25
मिशन 272+ : नरेन्द्र मोदी की महान उपलब्धि
– **मुरलीधर राव**.. 27

विजय रैली

अहमदाबाद/वड़ोदरा.. 29

अन्य

आनन्दीबेन बनीं गुजरात की मुख्यमंत्री.. 28

नमन!

~~~~~~☯☯☯~~~~~~

राष्ट्रनायक

महाराणा प्रताप

जयंती

'11 जून'

~~~~~~

बोध कथा

सफलता और असफलता

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन कर्मठ पत्रकार, तेजस्वी वक्ता और समाज सुधारक भी थे। एक बार वह बीमार पड़े। उन्हें देखने के लिए उनके एक पुराने सहपाठी प्रयाग पहुंचे। बहुत देर तक इधर-उधर की बातें हुईं फिर राजर्षि पुराने दिनों को याद करने लगे।

उन्होंने अपने जीवन के बारे में बताना शुरू किया- किसी समय मैं देशी रियासतों में राजाओं के कामकाज में सुधार करने के लिए एक आदर्श योजना बना रहा था, ताकि यह दिखाने का अवसर मिले कि भारतीय शासक अंग्रेजों से अच्छा शासन कर सकते है। इसी उद्देश्य के लिए बनाई गई योजना को अमल में लाने के लिए मैंने नाभा रियासत में नौकरी भी की थी, पर मैं असफल रहा। इस असफलता से मुझे पहले तो दुख हुआ, लेकिन अब लगता है कि वह मेरे लिए आगे की सफलता की भूमिका थी।'

उनके मित्र ने पूछा- वह कैसे? राजर्षि बोले- देखो, वहां मैं अंग्रेजों के कारण ही असफल हुआ। फिर मैंने अपना ध्यान देश से अंग्रेजों को हटाने में लगा दिया। अपनी छोटी सी सफलता को ही महत्वपूर्ण मान अपने आप में संतुष्ट रहता। लेकिन इस असफलता ने मेरे लिए साधना का नया द्वार खोल दिया। मैं एक बड़े दायरे में आया। मुझे कई नई चुनौतियां मिलीं। मैंने उनका सामना किया और देश के लिए काफी कुछ करने की कोशिश की। यह बताने के बाद राजर्षि ने कहा- असफलता के प्रति सृजनात्मक दृष्टि अपनाने से ही हमें सफलता भी मिलती है। इसलिए सफलता में भी संभावना देखनी चाहिए।

संकलन : लाजपत राय सभरवाल

(नवभारत टाइम्स से साभार)

व्यंग्य चित्र

जनादेश को नमन

'जीत' ऐतिहासिक। डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय की विचारधारा ने भारत में परचम फहराया। जनसंघ के दीए और भाजपा के कमल तक की यात्रा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन। कश्मीर से कन्याकुमारी तक कमल का फूल खिला। पांच सौ तैतालीस लोकसभा क्षेत्रों में कांग्रेस मात्र चौवालिस सीटों पर जीत सकी। चार सौ निन्यानवे सीटों पर जनता ने उसे नकार दिया। कांग्रेस अपनी स्थापना के समय से लेकर अब तक के इतिहास की सबसे कमजोर दौर से गुजर रही है। अबकी बार सरकार बनाने के लिए गठबंधन नहीं बल्कि विपक्ष का नेता चुनने के लिए गठबंधन की आवश्यकता पड़ेगी। 16वीं लोकसभा के निर्वाचन परिणाम ने उन सभी दलों और उन नेताओं को सबक सिखाया है, जिन्होंने भारतीय संसद को अवसरवादिता का केन्द्र एवं एक राजनैतिक बाजार बना दिया था। देश ने ऐसे लोगों को चुन-चुनकर उनकी हैसियत दिखाई है।

16वीं लोकसभा चुनाव में देश ने एक नहीं, अनेक संदेश दिए। जातीयता की बेड़ियां टूटीं। वर्षो से उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे प्रांतों में जातिवाद का जहर गांव-गांव तक पहुंचा दिया गया था। इस बार जातिवाद, क्षेत्रवाद पर राष्ट्रवाद का झंडा फहरा। अभी तक जनसंघ और भाजपा को लोग उत्तर भारत की पार्टी कहा करते थे। अब ऐसा नहीं कह सकते। प्रत्येक राज्य में भाजपा ने अपना विस्तार किया है। एक केरल को छोड़कर अधिकांश राज्यों में भाजपा या उसके गठबंधन ने झंडा फहराया हैं। आठ राज्यों में सभी की सभी सीटों पर और मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड सहित महाराष्ट्र में जो रिकार्ड कायम हुआ है, वह पूर्व में कभी नहीं हुआ। इस चुनाव में भावी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जो विकास की बात जनता के सामने रखी, उसे देश ने स्वीकार किया। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पीछे पलटकर नहीं देखा। उन्होंने छह करोड़ की आबादी वाले गुजरात राज्य से सवा सौ करोड़ की आबादी वाले भारत की और अपनी यात्रा प्रारंभ की। क्या उनकी अभूतपूर्व जन सैलाब उमड़ती सभाओं को कोई भूल सकता है! उन्होंने अथक परिश्रम किया। संगठन के निर्णय का एक कार्यकर्ता के नाते उन्होंने सहर्ष पालन किया। वे न बम से घबराए और न तपती धूप से परेशान हुए। उन्होंने पं. दीनदयाल उपाध्याय के मंत्र 'चरैवेति-चरैवेति' का निरंतर पालन किया। एक राज्य के मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने भारत के प्रत्येक राज्य के मर्म को समझने की कोशिश की। नरेन्द्र मोदी जी ने देश के चुनाव का एजेण्डा सैट किया। देश के पक्ष-विपक्ष सभी नेताओं को 'गुजरात मॉडल' और गुजरात के विकास के पक्ष या विरोध में बोलना पड़ा। भारत का यह पहला चुनाव था जिसे नरेन्द्र मोदी जी ने भाजपा और स्वयं केन्द्रित कर दिया था।

देश के भावी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के सामने वर्तमान राजनैतिक परिस्थितियों को साफ-साफ शब्दों में कहा। पूरे चुनाव के दौरान, कांग्रेस, बसपा, सपा, राजद एवं अन्य दलों सहित उनके नेताओं ने श्री नरेन्द्र मोदी पर हर तरह का प्रहार किया, पर श्री नरेन्द्र मोदी ने कभी उस ओर ध्यान नहीं दिया। वे निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते गए। अगर उन्होंने कांग्रेस को मां-बेटे की पार्टी कहा तो उत्तर प्रदेश में भी वही हुआ। सिर्फ मां और बेटा कांग्रेस से जीते। यही हाल सपा का उत्तर प्रदेश में हुआ। वहां एक परिवार के चार लोग जीते। बसपा साफ हो गई।

भाजपा ने चुनाव-पूर्व 29 दलों से गठबंधन किया। जबकि पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के समय एनडीए के सिर्फ 24 दलों का गठबंधन था। एक समय लोग भाजपा को अछूत कहते थे, लेकिन देखते-देखते श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा गठबंधन और मजबूत होती चली गई।

सच्चाई तो यह है कि देश में यूपीए के खिलाफ माहौल था और श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति जबरदस्त आकर्षण था। देश पिछले दस वर्षों में थक गया था। देश में श्री नरेन्द्र भाई मोदी ने आशा की किरण जगाई। आशा की ज्योति ऐसी जली कि वह एक दीप से पूरे देश के दीपों के साथ एक-एक कर जलती गई। पूरा देश जगमगा गया। राजनीति के घटते विश्वास को थामने की कोशिश श्री नरेन्द्र भाई मोदी ने की। उन्होंने जनता में यह विश्वास जताया कि देश बोझ नहीं है। देश को 21वीं सदी में सर्वोच्च स्थान पर ले जाना है। भारत मां का चित्र श्री नरेन्द्र मोदी के सामने हैं। उन्होंने कहा कि मैं मां की सेवा के लिए निकला हूं। मुझे गंगा मां ने बनारस में बुलाया है। देश में श्री नरेन्द्र मोदी जी की स्वीकार्यता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि मात्र 18 घंटे गुजरात राज्य की धरती पर गए और गुजरात के गौरव श्री नरेन्द्र भाई मोदी को लोगों ने राज्य की सभी सीटें सौंप दीं।

देश खुश है। राष्ट्रीय विचारधारा और 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के वाहक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका को राष्ट्र भूल नहीं सकता। गत चार महीनों से संघ के स्वयंसेवकों ने जिस तरह से घर-घर जाकर देश के नागरिकों को जगाया, वह अविस्मरणीय रहेगा। 'भारत मां' की चरणों में श्रद्धा के सुमन चढ़ाते हुए स्वयंसेवकों ने देश के सामने एक ही बात रखी कि भारत को बचाइए। सच में, भारत को बचाने की कोशिश देश की जनता ने एक स्वर में किया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने संगठन को और नेतृत्व को जिस कुशलता से बांधे रखा, वह उनकी संगठनात्मक कुशलता का अद्वितीय परिचय देता है। कंधे से कंधा मिलाकर उन्होंने श्री नरेन्द्र भाई मोदी का साथ दिया। पूरे संगठन ने कहीं यह अवसर नहीं आने दिया जहां श्री नरेन्द्र मोदी को हताश होना पड़े। संगठन ने सदैव उनका मनोबल बढ़ाया।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। पूरे विश्व की नजर इस चुनाव पर लगी हुई थी। राष्ट्रघाती और अराजक तत्त्व और जो लोग भारत की राजनीति को अस्थिर रखना चाहते थे, उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन भारत के लोकतंत्र के प्रहरियों ने अपने मतदान से श्री नरेन्द्र भाई मोदी को यह विश्वास दिलाया कि हम भाजपा को भी अकेले स्पष्ट बहुमत देंगे और एनडीए को भी। सन् 1984 के बाद यानी तीस साल बाद भारत ने 16वीं लोकसभा चुनाव में इतिहास रचा।

जनता, कार्यकर्ता और देश को चलाने वाला तंत्र आज मुस्कुरा रहा है। देश को वर्षों बाद एक ऐसा नेतृत्व मिला है, जिस पर विश्व की निगाहें गड़ी हुई हैं। विकास के द्वार खुलेंगे और भारतीयों के चेहरे पर मुस्कान होगी। देश के नागरिकों ने देश के राजनैतिक नेताओं को अपनी असीम परिपक्वता का परिचय दिया है। इस चुनाव परिणाम ने सभी को धरती दिखाई है। जो लोग जनता को गुमराह करते रहे अब वे जनता को गुमराह नहीं कर सकते। देश और देश की जनता ने जो जनादेश दिया है, उसे राष्ट्रीय विचारधारा के पोषकों ने सहज शिरोधार्य किया है।

देश आशा भरी निगाहों से श्री नरेन्द्र भाई मोदी की ओर देख रहा है। हम सभी को पूरी उम्मीद है कि श्री नरेन्द्र भाई मोदी 'भारत मां' की विजय पताका अपने कार्यों से विश्व में फहरायेंगे। ■

पूरे देश में नमो लहर नहीं, बल्कि सुनामी बन गई भाजपा की ऐतिहासिक विजय, कांग्रेस पराजित

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में हाल में हुए सम्पन्न आम चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने एक ऐसी ऐतिहासिक जीत हासिल की है जिसमें उसे पिछले दो आम चुनावों में संयुक्त रूप से प्राप्त सीटों से अधिक 282 सीटें प्राप्त हुई हैं और यह आंकड़ा 1984 चुनावों से लेकर अब तक का सर्वश्रेष्ठ रहा है। लोकसभा में भी एनडीए ने 336 सीटें जीत कर एक इतिहास रच दिया है। यह भी हर्ष की बात है कि 2014 के पार्टी चुनावों में उसका वोट-शेयर 2009 के वोट शेयर की तुलना में 1.5 गुना बढ़ा जिससे देश में डाले गए मतों में लगभग हर तीसरे व्यक्ति ने भाजपा को वोट दिया है।

विजय के बाद हर्षोन्मत्त भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा - समय आ गया है जब हम फिर से भारतीय गाथा की रचना करे... 1984 के बाद से ऐसा पहली बार हो रहा है। भाजपा ने देश के सभी क्षेत्रों, धर्मो और जातियों से ऊपर उठकर सफलता प्राप्त की है।

देखा जाए तो कांग्रेस पराजित हो गयी है और आज वह राष्ट्र में बह रही भाजपा सुनामी में गिरकर 44 सीटों तक की दुर्गति पर पहुंच गई है। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल के नेतृत्व में लड़ी गई इस चुनावी लड़ाई में उसकी स्थिति तो औपचारिक रूप से प्रतिपक्ष का दर्जा प्राप्त करने की भी नहीं रह गई, जिसके लिए उसे लोकसभा की कुल सीटों का 10 प्रतिशत सीटें प्राप्त करना जरूरी था। इसी तरह आम आदमी पार्टी की महत्वाकांक्षा भी बुलबुले फूटने जैसी हो गई है जिसमें उसने चुनाव में लड़ी 400 सीटों में से केवल 4 सीटें मिल पाई और वामपंथियों को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा प्राप्त करने का हक भी नहीं रह गया है।

भाजपा को सबसे अधिक उत्तर प्रदेश से 71 सीटें मिली और वोट शेयर भी बढ़कर 42.3 प्रतिशत तक जा पहुंचा यह 1984 से लेकर आज तक की 80 सीटों में से अकेली भाजपा पार्टी को प्राप्त हुआ है। इसमें पूर्व भाजपा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन उत्तर प्रदेश में 1998 में 85 सीटों में से 57 सीटें मिलने का

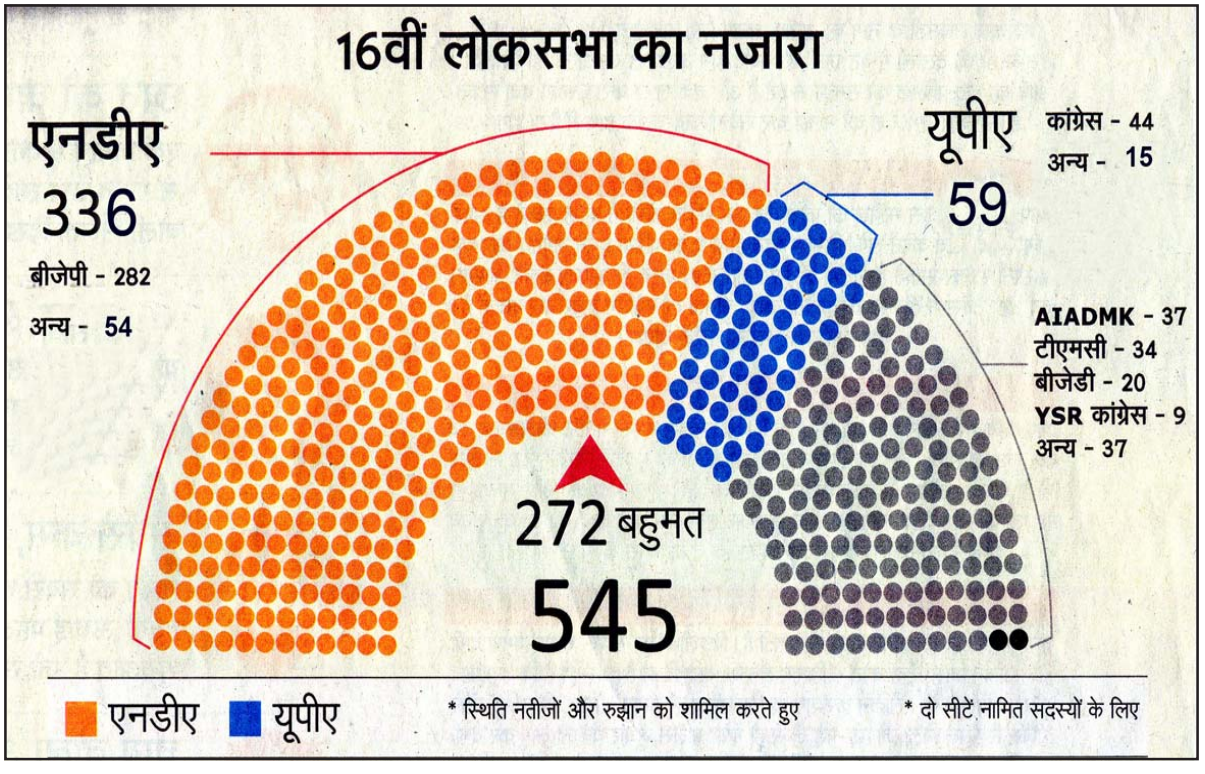

रहा है। इसके साथी दल अपना दल ने भी 2 सीटें प्राप्त की हैं। जिसे मिलाकर राजग को 73 सीटें प्राप्त हुई हैं।

उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, दिल्ली, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड जैसे हिन्दी क्षेत्रों में भाजपा की स्थिति बहुत मजबूत बन कर सामने आई और उसे 225 सीटों में से 190 सीटें ही प्राप्त नहीं हुई बल्कि सपा, बसपा, जेडी(यू), आरएलडी और आरजेडी का सूपड़ा ही साफ कर दिया। भाजपा ने श्री नरेन्द्र मोदी के गृह राज्य गुजरात, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली, गोवा जैसे राज्यों में सभी सीटें जीती तथा महाराष्ट्र, कर्नाटक और असम जैसे राज्यों में भी उसकी स्थिति बेहद बेहतर रही। इसके अलावा, पार्टी को 195 सीटों पर एक लाख से अधिक वोटों पर जीत हासिल की है।

भाजपा ने राज्यों में वोट-शेयर में भी सुधार किया है, जहां उसकी पर्याप्त उपस्थिति नहीं रहीं थी। भाजपा को ओडिशा में 21 प्रतिशत, पश्चिम बंगाल में 17 प्रतिशत और केरल में 10 प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त हुए और इस तरह से वह इन राज्यों में भी एक बड़ी ताकत बन कर उभरी है। भाजपा की यह अखिल भारत उपस्थिति पहली बार हुई है इसमें जरा भी शक नहीं कि उसे पहली बार तीन दशकों में अपने ही बल पर बहुमत प्राप्त हुआ है। जाति, सम्प्रदाय, धर्म और भूगोल सभी बाधाओं को पार कर उसने 282 की अविश्वसनीय स्थिति प्राप्त की जो सरकार बनाने के लिए आवश्यक 272 सीटों से 10 सीटें अधिक रही है।

भाजपा के प्रधानमंत्री प्रत्याशी श्री नरेन्द्र मोदी ने बड़ी शालीनता से इस ऐतिहासिक विजय को स्वीकार किया और लोगों के समक्ष आकर उन्होंने पहले अपनी माताश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया और फिर वडोदरा और अहमदाबाद में जनता को सम्बोधित किया। वडोदरा में श्री मोदी ने विजय श्री को गले लगाकर अपने भाषण में कहा कि 'सरकार के लिए किसी के साथ पक्षपात नहीं किया जाता है और न ही कोई पराया होता है। लोगों के जन समूह ने उनकी एक-एक बात पर तालियों की गड़गड़ाहट से उनका अभिनन्दन किया। श्री मोदी ने आगे कहा कि लोकतंत्र में कोई शत्रु नहीं होता है, केवल प्रतिद्वन्द्वी होते हैं। श्री मोदी ने बाद में अपने आक्रामक अभियान वाले भाषण में अहमदाबाद में एक विशाल भीड़ के सामने कहा- ''उनको पता नहीं था कि मोदी कैसा जादूगर है। अन्य दलों ने विकास के मुद्दे से बचने की कोशिश की परन्तु मैंने उनसे इसी मुद्दे पर लड़ने के लिए बाध्य कर दिया।''

श्री मोदी ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि देश में चुनाव के लिए विकास ही एक मात्र मुद्दा हो सकता है। अत: यह चुनाव परिणाम विकास और इसी उम्मीद पर आया है ताकि भारत को आगे ले जाया जा सके और लोगों के सपनों को साकार किया जा सके।

भाजपा ने नए क्षेत्रों में प्रवेश किया

भाजपा की ऐतिहासिक विजय की घोषणा करते हुए पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की उन प्रसिद्ध पंक्तियों को उद्धृत किया- 'अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा।'' आज कमल खिल चुका है और आशा की नई सुबह हो गई है।

उन्होंने कहा कि ऐसे क्षेत्रों में जहां भाजपा के गढ़ नहीं रहे हैं, वहां भी स्थिति में सुधार से पता चलता है कि श्री नरेन्द्र मोदी को राष्ट्रीय नेता और प्रधानमंत्री मान लिया गया है। यह देशभर के लोगों का प्यार है जिससे पूर्वोत्तर, पूर्व और दक्षिण जैसे क्षेत्रों में वोट शेयर में बढ़ोतरी हो पाई है। श्री मोदी के नेतृत्व ने इन क्षेत्रों को भी भाजपा-लहर के समर्थकों से भर दिया है।

वरिष्ठ भाजपा नेता श्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि श्री मोदी के खिलाफ राजनैतिक विनाशकारी गतिविधियों और राजनीति से प्रेरित षडयंत्र उनके विजय में कोई भी बाधा नहीं डाल सका। सुशासन के उनके वायदे ने सभी लोगों को

आकृष्ट किया और उन्हें आशा और बदलाव का प्रतीक माना गया।

लोकसभा चुनावों में भाजपा की संशोधित रणनीति आखिरी मील के पत्थर तक पहुंचने की रही थी। देश के दूर-दराज क्षेत्रों में विस्तृत प्रचार किया गया और लोगों से रोजगार, विकास, सुरक्षा और प्रगति के वायदे किए गए। पूर्वोत्तर राज्यों में से प्रत्येक राज्य के लिए अलग से घोषणा-पत्र बनाए गए और इन क्षेत्रों की रैलियों में श्री मोदी ने विकास, सीमा क्षेत्रों की सुरक्षा, अवैध घुसपैठ और पर्यावरण पर विशेष ध्यान देने की बात कही।

उदाहरण के लिए, मणिपुर में, जहां पार्टी को 11 प्रतिशत मत प्राप्त हुए, वहां हमारे वायदों में मुख्य मार्गों के बनाने का वायदा करते हुए कहा कि सशस्त्र बल (विशेष शक्ति) अधिनियम 1958 के जटिल मुद्दे पर भी चर्चा की जाएगी और प्रशासन का विकेन्द्रीकरण किया जाएगा। पश्चिम बंगाल में श्री रविशंकर प्रसाद का कहना था कि वामपंथियों और तृणमूल कांग्रेस के बीच पार्टी ने अपना स्थान बना लिया है। यहां भी, बेहतर अर्थव्यवस्था और विकास का वायदा किया गया। भले ही, भाजपा को दो सीटें मिली हों, परन्तु 16 प्रतिशत मत प्राप्त कर पार्टी ने अच्छी शुरूआत की है।

इसी प्रकार, केरल में 10 प्रतिशत, जम्मू और काश्मीर में 32 प्रतिशत, असम में 36 प्रतिशत, ओडिशा में 21 प्रतिशत, मेघालय में 8 प्रतिशत और मणिपुर में 11 प्रतिशत वोट शेयर प्राप्त कर भाजपा केवल उत्तर, पश्चिम और मध्य भारत तक सिमट कर नहीं रह गई है और उसने एक वास्तविक राष्ट्रीय पार्टी का रूप धारण कर लिया है।

मोदी लहर में यूपीए केबिनेट का किया विनाश

कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार के मंत्रियों को पूरी तरह सफायदा हुआ और इस प्रकार केन्द्रीय मंत्रीमंडल के अधिकांश सदस्यों को हार का सामना करना पड़ा जो लोकसभा चुनावों में आज तक सबसे बुरी हार है। वरिष्ठ मंत्रियों- केन्द्रीय गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे, विधि मंत्री कपिल सिब्बल और विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद जैसे दर्जनों मंत्री अच्छे खासे अन्तराल से हारे है। जहां हमने देखा है कि सिब्बल अपने निर्वाचन क्षेत्र में तीसरे स्थान पर पहुंचे तो उधर खुर्शीद साहब का बहुत दूर का पांचवां स्थान रहा। कांग्रेस के लिए एक और बड़ा नुकसान लोकसभा की अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के रूप में हुआ।

कोयला मंत्री श्री प्रकाश जायसवाल, स्वास्थ्य मंत्री गुलाम नबी आजाद, इस्पात मंत्री बेनी प्रसाद वर्मा और कार्पोरेट मंत्री सचिन पायलट ऐसे दिग्गज हैं, जो चुनाव हारे। उर्वरक मंत्री श्रीकांत जेना और एचआरडी मंत्री एम एम पल्लम राजू भी अपनी सीटें नहीं बचा पाए। पायलट दूसरे स्थान पर रहे और वे 1.7 लाख से अधिक मतों से हारे, तो जेना, राजू और वर्मा तो दूसरे स्थान पर भी नहीं रह पाए। यहां तक कि कांग्रेस गठबंधन के मंत्रियों में भारी उद्योग मंत्री एनसीपी के प्रफुल्ल पटेल, नेशनल कांफ्रेंस के अक्षय ऊर्जा मंत्री फारूख अब्दुल्ला और राष्ट्रीय लोकदल के नागरिक उड्डयन मंत्री अजीत सिंह को भी पराजय का सामना करना पड़ा।

केवल केबिनेट की बात ही नहीं, बल्कि युवा मंत्रीगणों की स्थिति भी खराब रही। गृह राज्यमंत्री आरपीएन सिंह, दूरसंचार राज्य मंत्री मिलिन्द देवड़ा, रक्षा राज्य मंत्री जितेन्द्र सिंह और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री जितिन प्रसाद भी हारे। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल के करीबी माने जाने वाले इस युवा ब्रिगेड से हारने के कारण समझा जाता है कि कांग्रेस की भावी योजनाओं को भी गहरा झटका लगेगा।

ऐसा कहा जाता है कि आसन्न पराजय को देखते हुए वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम, रक्षा मंत्री ए. के. ऐंटनी, ग्रामीण कार्य मंत्री जयराम रमेश और कृषि मंत्री शरद पवार जैसे यूपीए सरकार के वरिष्ठ मंत्रियों ने तो चुनाव तक नहीं लड़ा।

दिल्ली भाजपा मुख्यालय पर उभरा हर्षोल्लास

लोकसभा में भारी विजय प्राप्त करने पर खुशियां मनाने के लिए नई दिल्ली में भाजपा मुख्यालय पर जमा हुए भाजपा

THE LANDMARK WIN: Senior BJP leaders L. K. Advani, Venkaiah Naidu, Ram Lal Sharma and Jagat Prakash Nadda address party supporters in New Delhi

के हजारों कार्यकर्ताओं ने नगाड़ों पर नाचते हुए, नारे लगाते हुए, पटाखे आदि जलाते हुए और लड्डू बांटकर अपना हर्षोल्लास प्रगट किया।

पार्टी के कार्यकर्ता इतने अधिक उत्साहित थे कि पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बाहर निकल विजय की खुशियां मनाते दिखे। पार्टी मुख्यालय के पास की सड़क पर पूरी तरह से घेर लिया गया था। इन बेरिकेडों के पार कुछ हाथी भी दिखाई पड़े। यहां पर लगे 'एल ई डी' स्क्रीन पर भाजपा को बहुमत मिलते देख कर कार्यकर्ताओं की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पार्टी कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे से गले मिलते हुए गुलाल लगाया।

यहां एक बड़ा टी-स्टॉल था- नमो टी स्टाल जिस पर मुफ्त चाय दी जा रही थी। 'देश का प्रधानमंत्री कैसा हो, नरेन्द्र मोदी जैसा हो...' 'घर घर मोदी' जैसे नारों से माहौल गूंज उठा और एक दूसरे को लड्डू बांटे गए।

दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली की सात लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में भारी अन्तर से संसद की सभी सीटों पर

BJP candidate from Chandni Chowk Harsh Vardhan celebrates with supporters after the party's win in Delhi on Friday.

कब्जा कर लिया। इससे पूर्व 1999 में भाजपा ने दिल्ली में सातों सीटें जीती थीं और उस समय भाजपा के नेतृत्व में राजग केन्द्र में सत्ता में आई थी।

इस एक्जिट पोल में चुनावी परिणामों में, जिन्होंने आम आदमी पार्टी को दिल्ली में तीन से चार सीटें देने की भविष्यवाणी की थी, वह सभी फेल हो गई। कांग्रेस ने 2009 के चुनावों में सातों सीटें जीती थीं। किन्तु, केन्द्रीय मंत्री कृष्णा तीरथ, जे.पी. अग्रवाल, रमेश कुमार और महाबल मिश्रा जैसे वर्तमान मंत्रियों ने इस बार तो अपनी जमानत भी गंवा दी। अन्य कांग्रेस नामों में केन्द्रीय मंत्री कपिल सिब्बल, एआईसीसी महासचिव अजय माकन और पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित हैं, जिन्हें पराजय की धूल चाटनी पड़ी।

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के चुनाव परिणाम अविश्वसनीय रहे। भारतीय जनता पार्टी ने राज्य में सभी अन्य दलों का सूपड़ा साफ करके रख दिया, जिससे कांग्रेस और समाजवादी पार्टी को मिली सीटें एक अंक तक सीमित कर दिया और बहुजन समाजवादी पार्टी तथा राष्ट्रीय लोकदल तो खाता तक नहीं खोल पाए।

भाजपा के स्वयं अपने बल पर यहां 71 सीटें जीतीं और वोट शेयर रहा 42 प्रतिशत। यह 2009 चुनावों की तुलना में 25 प्रतिशत अधिक है जब भाजपा को मात्र 10 सीटें मिली थी। भाजपा के साथी 'अपना दल' को दो सीटें मिलीं, जिससे एनडीए को यूपी में इस प्रकार 73 सीटें बन गईं। यह भाजपा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है जो 1998 से भी कहीं अच्छा रहा जब उस समय भाजपा को 85 में से लोकसभा में 57 सीटें मिली थीं और उस समय उत्तर प्रदेश अविभाजित था।

यूपीए में भाजपा की सीटों की संख्या राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के संयुक्त अंकों से कहीं ज्यादा है। कांगेस और समाजवादी पार्टी ने क्रमशः पांच और दो सीटें जीतीं और संयोग से ये सारी सीटें मुलायम सिंह और सोनिया गांधी के परिवारों की हैं। यदि गांधी परिवार ने रायबरेली और अमेठी सीटें जीती तो यादव परिवार के विजेताओं में मैनपुरी और आजमगढ़ से मुलायम सिंह यादव, उनकी पुत्र-वधु डिम्पल यादव, भतीजा धर्मेन्द्र यादव और प्रो. रामगोपाल यादव के पुत्र अक्षय यादव रहे। परन्तु लोकसभा चुनावों में बहुजन समाजवादी पार्टी का मटियामेट हो गया। पिछले लोकसभा चुनावों में मायावती की बसपा ने 20 सीटें जीतीं थी परन्तु इस बार इसका खाता तक नहीं खुला।

यूपी विधानसभा में उप-चुनाव में भाजपा ने तीन सीटें जीतीं

उत्तर प्रदेश के विधानसभा उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने चार विधानसभा सीटों में से तीन सीटों पर विजय प्राप्त

की, जहां लोकसभा चुनाव के साथ ये चुनाव हुए। प्रतापगढ़ में विश्वनाथगंज सीट पर भाजपा-अपनादल प्रत्याशी रमेश वर्मा ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी सपा के संजय पाण्डे को 14071 मतों से हराया। इसी प्रकार उन्नाव सीट पर भाजपा के पंकज गुप्ता ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी सपा की मनीषा दीपक को 54662 मतों से हराया। फतेहपुर सीट पर भाजपा उम्मीदवार विक्रम सिंह ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी बसपा के जितेन्द्र लोदी को 12509 मतों से पराजित किया।

बिहार

पूरे देश की तरह ही, नरेन्द्र मोदी की लहर ने बिहार में सत्तारूढ़ दल जेडी(यू) और राष्ट्रीय जनता दल का सफाया कर दिया जिसमें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और आरजेडी मुखिया लालू प्रसाद को गहरा झटका लगा। भाजपा और इसके साथी दल लोक जनसशक्ति और राष्ट्रीय लोक समता पार्टी ने 40 सीटों में से 31 सीटें जीतीं हैं, जिसमें आरजेडी-कांग्रेस-एनसीपी गठबंधन और जेडी(यू) को क्रमश: सात और दो सीटें मिल पाई हैं।

2009 के आम चुनावों में जेडी(यू) और भाजपा ने मिलकर बिहार में 32 सीटों पर कब्जा किया था। परन्तु, 15वीं लोकसभा में जेडी(यू) के पास 20 सीटें थीं, उसे केवल दो सीटें ही मिल सकीं। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष शरद यादव सहित जेडी(यू) के बाकी प्रत्याशी हार गए।

महाराष्ट्र

यह कहना गलत ही होगा कि यह मोदी लहर थी, बल्कि यह तो सुनामी थी जिससे राह में आने वाली हर चीज मिटकर रह गई। इस बात को मुम्बई में कांग्रेस के नेता ने महाराष्ट्र में कांग्रेस के खराब प्रदर्शन के बारे में स्वयं कहा है।

कांग्रेस-एनसीपी की संयुक्त रूप से हुई पराजय इतनी भयंकर थी कि इन दोनों ने मिलकर भी लोकसभा की सीटों में दोहरा अंक तक नहीं पा सकीं। कांग्रेस की मात्र दो सीटें रह गई तो एनसीपी को चार सीटें मिलीं। 2009 में इन दोनों पार्टियों ने मिलकर क्रमश: 17 और 8 सीटें प्राप्त की थीं।

दूसरी तरफ, महाराष्ट्र में भाजपा ने प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए 23 सीटें जीतीं तो उसके साथी शिवसेना ने 18 पर विजय हासिल की तथा एक सीट सहयोगी दल ने प्राप्त की जिससे कुल 48 सीटों में से यह संयुक्त संख्या 42 बन गई।

स्टॉक मार्केट ने किया भाजपा का स्वागत

सेंसेक्स ने लगाई छलांग

अगली सरकार भाजपा-नीत एनडीए की बनती देखते हुए स्टॉक सूचकांक रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया। सेंसेक्स 366 अंक ऊपर बढ़कर खुला और अपने पिछले 25375 से 1470 अंक तक ऊंचा हो गया। एनएसई निफ्टी, भी 400 अंक बढ़ा और यह 7563.50 तक जा पहुंचा।

मार्केट एक्सपर्टों का कहना है कि ये परिणाम उम्मीदों से कहीं आगे बढ़ गए हैं। किसी ने नहीं सोचा होगा कि

एनडीए 330 प्लस स्तर तक पहुंच जाएगी। और जब इन्होंने ये संख्या लांघ ली है तो इसे भारी विजय ही कहा जा सकता है। मार्केट में इसका भारी स्वागत हुआ है। पिछले कुछ दिनों में उम्मीद में भारी स्थिति का निर्माण हुआ है और जब यह खबर मिली तो मार्केट के लोगों ने लाभ कमाने की दृष्टि से ऐसी स्थिति बना डाली।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में भी फिर से भारतीय जनता पार्टी ने भारी विजय प्राप्त की। पार्टी ने कुल 29 लोकसभा सीटों में से 27 सीटें जीत लीं। कांग्रेस केवल दो सीटों पर विजय रही जो उनके दिग्गज नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया और कमलनाथ के रूप में प्राप्त हुई। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार भाजपा का वोट शेयर 54 प्रतिशत रहा और कांग्रेस का 34.9 प्रतिशत। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने लोकसभा चुनावों में इस भव्य विजय का श्रेय श्री नरेन्द्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व को दिया है। दूसरी तरफ कांग्रेस ने कई प्रकार की गलतियां की और यूपीए की इन्हीं गलतियों के कारण ही भाजपा देश के 30 वर्षों के इतिहास पर अपने बल पर ही सत्तारूढ़ हुई है।

वरिष्ठ भाजपा नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने भी अपनी विदिशा सीट बरकरार रखी और वह 4,10,698 मतों से जीतीं। मध्य प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर भी ग्वालियर सीट से 29,699 मतों से जीते। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व मुख्यमंत्री (स्वर्गीय) अर्जुन सिंह के पुत्र अजय सिंह सतना सीट से वर्तमान सांसद गणेश सिंह से 8,688 मतों से जीते। भाजपा के राव उदय प्रताप सिंह मध्य प्रदेश में होशंगाबाद सीट से 3,89,960 मतों से अपने प्रतिद्वन्द्वी कांग्रेस के देवेन्द्र पटेल को मात दी।

गुजरात

नरेन्द्र मोदी की लहर ने गुजरात में कांग्रेस की लुटिया ही डुबो दी क्योंकि ऐसा पहली बार चुनाव के इतिहास में हुआ है कि उसे राज्य में एक भी सीट नहीं मिल पाई। भाजपा में प्रधानमंत्री प्रत्याशी श्री मोदी के गृह राज्य में सभी 26 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों पर कब्जा जमाया है। इसके प्रत्याशियों में से 24 प्रत्याशियों ने तो एक लाख से भी ऊपर मत प्राप्त कर अन्य प्रत्याशियों को हरा दिया। श्री मोदी स्वयं वडोदरा सीट से 5.70 लाख वोटों से जीते। वडोदरा के लोगों का आभार प्रगट करते हुए उन्होंने कहा कि यह अभी तक के आम चुनावों में रिकार्ड मार्जिन है। भाजपा संसदीय दल अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी भी गांधी नगर से 4.63 लाख से अधिक वाटों से जीते हैं।

पहली बार गुजरात में कांग्रेस एक भी लोकसभा सीट नहीं जीत पाई है। 2009 में पार्टी ने 11 सीटें जीतीं थी। पार्टी के महासचिव मधुसूदन मिस्त्री और राज्य विधानसभा में विपक्षी नेता शंकर सिंह वाघेला के अलावा तीन कांग्रेसी केन्द्रीय मंत्री दिनेश पटेल, तुषार चौधरी और भरत सोलंकी उन लोगों में रहे हैं जिन्हें धूल चाटनी पड़ी।

कर्नाटक

कर्नाटक राज्य में 28 लोक सभा सीटों में से भाजपा ने 17 सीटों पर शानदार विजय हासिल की है। भाजपा ने दिखा दिया है कि अब भाजपा वह दल है जो 1991 से लगातार अच्छा प्रदर्शन करते हुए दक्षिण के राज्यों में प्रमुख ताकत बन चुकी है।

भाजपा के दिग्गज नेताओं में पूर्व केन्द्रीय मंत्री और महासचिव श्री अनंत कुमार, पूर्व मुख्यमंत्री श्री बी.एस. येदियुरप्पा और श्री डीवी सदानंद गौडा और राज्य भाजपा अध्यक्ष श्री प्रहलाद जोशी भारी मतों के अंतर से जीते हैं।■

विश्व मीडिया ने भाजपा की जीत की तारीफ की

अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने भाजपा की शानदार जीत पर नरेन्द्र मोदी को व्यावहारिक, समझदार नेता बताया, लेकिन साथ ही आगाह किया कि फौलादी शैली से काम करने वाले राजनीतिज्ञ की राह में अनेक चुनौतियां हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स ने लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत पर टिप्पणी करते हुए कहा कि सामान्य पृष्ठभूमि से आए और राष्ट्रवादी समूह की कतारों से होते हुए ऊपर उठे मोदी अपनी अडिग विचारधारा और नेतृत्व की अपनी फौलादी शैली के साथ इस पद पर अपने पूर्ववर्तियों से बिल्कुल विपरीत साबित होंगे।

टाइम्स ने कहा कि किसी कठोर, अनुशासित नेता के रूप में उनकी (मोदी की) छवि ने व्यापक स्तर पर वोटरों को आकर्षित किया है जिन्हें अपेक्षा है कि वह भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करेंगे, भारत की गिरती अर्थव्यवस्था को उछाल देंगे और विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजित करेंगे।

वाशिंगटन पोस्ट ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि थकाऊ अभियान के बाद, आर्थिक सुधारक और राष्ट्रवादी नरेन्द्र मोदी का भारत का अगला प्रधानमंत्री बनना तय है।

पोस्ट ने कहा कि 63 वर्षीय मोदी ने एक ऐसे समय उम्मीद और पुनर्जीवन के संदेश पर अभियान चलाया जब देश अवरूद्ध अर्थव्यवस्था से निढ़ाल था और यह भावना घर किए हुए थी कि उज्ज्वल भविष्य का वायदा धूमिल हो गया है।

पोस्ट ने यह कहते हुए आगाह किया कि कारोबारोन्मुखी मोदी को वृद्धि दर में हाल की गिरावट और रोजगार सृजन तथा आसमान चढ़ती मुद्रास्फीति की गहरी चुनौतियों का सामना करना है।

लॉस एंजिलिस टाइम्स ने भाजपा की जीत को एक दुर्लभ शानदार चुनावी जीत बताया और यह करिश्माई नेता नरेन्द्र मोदी के लिए समर्थन की राष्ट्रव्यापी लहर को प्रतिबिंबित करती है जो भारत के अगले प्रधानमंत्री बनेंगे।

ब्रिटिश मीडिया का आम लहजा भाजपा की दक्षिणपंथी जड़ों पर चेतावनी सा प्रतीत होता है।

बीबीसी ने कहा कि भारत की मुख्य विपक्षी पार्टी भाजपा किसी अमरपक्षी की तरह मायूसी की गहराई से उठी है।

बीबीसी ने कहा कि अपेक्षा है कि भाजपा कांग्रेस के शासन के एक दशक बाद भारत को दक्षिण की तरफ ले जाए।

उसने कहा कि नए प्रधानमंत्री पश्चिमी राज्य गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी होंगे, जो व्यवहारिक, समझदार नेता के रूप में देखे जाते हैं जो विकास और मजबूत राष्ट्रवाद के पक्ष में खड़ा होते हैं। ■

दुनिया भर के नेताओं ने दी नरेंद्र मोदी को बधाई!

दुनिया भर से विश्व नेताओं ने भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी को लोकसभा चुनाव में पार्टी की शानदार जीत पर बधाई दी और कहा कि वे उनके साथ काम करने को उत्सुक हैं।

जिन विश्व नेताओं ने मोदी को बधाई दी, उनमें पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ, श्रीलंकाई राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे, ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरन, ऑस्ट्रेलिया और इस्राइल के प्रधानमंत्री शामिल हैं। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना और विपक्षी नेता खालिदा जिया ने भी मोदी को बधाई संदेश भेजे हैं।

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने नरेंद्र मोदी को फोन किया और चुनाव में शानदार जीत पर उन्हें बधाई दी और उन्हें पाकिस्तान आने का न्यौता दिया।

वहीं श्रीलंका के राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे ने भारतीय लोकसभा चुनावों में भाजपा की बड़ी जीत के लिए नरेंद्र मोदी को बधाई दी और उन्हें राजकीय दौरे पर आमंत्रित किया। उन्होंने उम्मीद जताई कि दोनों देशों के बीच के रिश्ते और भी मजबूत होंगे।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरन ने भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी को लोकसभा चुनाव में उनकी पार्टी की जीत पर बधाई देते हुए कहा कि वह मोदी के साथ मुलाकात के लिए इच्छुक हैं। उन्होंने मोदी को ब्रिटेन यात्रा की दावत भी दी।

अपने बधाई संदेश में ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री टोनी ऐबट ने उम्मीद जताई कि उनका देश और भारत द्विपक्षीय रिश्तों को और भी प्रगाढ़ करने के लिए मिल कर काम करेंगे। उन्होंने कहा कि वह ऑस्ट्रेलिया में आयोजित होने वाले आगत समूह-20 शिखर सम्मेलन में मोदी से मिलने को उत्सुक हैं। समूह-20 शिखर सम्मेलन नवंबर में ब्रिसबेन में होगा। उधर, फोन पर बातचीत में इस्राइली प्रधानमंत्री ने कहा कि वह मोदी के साथ काम करने और द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए उत्सुक हैं।

चीन ने भी लोकसभा चुनाव में भाजपा की शानदार जीत पर मोदी को बधाई देते हुए कहा कि वह नई भारत सरकार के साथ काम करने और द्विपक्षीय सामरिक साझेदारी को नई बुलंदियों पर ले जाने लिए उत्सुक हैं।

चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता हुआ चुनयिंग ने कहा, 'चीन नई भारत सरकार के साथ संयुक्त प्रयास करने, उच्च स्तरीय आवागमन बनाए रखने, सभी क्षेत्रों में सहयोग को गहराई देने और चीन भारत सामरिक साझेदारी को नई बुलंदियां देने का इच्छुक है।'

बराक ओबामा ने नरेंद्र मोदी को बधाई दी

अमेरिकी राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा ने 16 मई को श्री नरेंद्र मोदी को टेलीफोन करके उन्हें लोकसभा चुनावों में शानदार जीत की बधाई दी। इस बातचीत में दोनों नेताओं ने भारतीय-अमेरिकी रणनीतिक साझेदारी और वैश्विक आर्थिक स्थिति पर चर्चा की। श्री ओबामा ने श्री मोदी से कहा कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र ने निर्णायक जनादेश दिया है। अमेरिकी नेता ने आशा जताई कि श्री मोदी के नेतृत्व में भारत वैश्विक स्तर पर असरदार भूमिका निभाएगा। वॉशिंगटन में, व्हाइट हाउस के प्रेस सचिव श्री जे कार्नी ने कहा कि प्रधानमंत्री बनने जा रहे नरेन्द्र मोदी का अमेरिका में दौरे के लिए स्वागत है।■

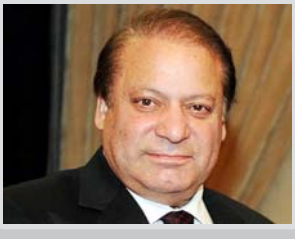

भाजपा नेता बोले....

मैं मानता हूं कि इस परिणाम को लाने के लिए भ्रष्टाचार, महंगाई और कुशासन, ये तीन प्रमुख कारण रहे, जिसके कारण यह परिणाम आया है।

- लालकृष्ण आडवाणी

यह जीत भाजपा के लाखों कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत, संघ के आशीर्वाद और श्री नरेंद्र मोदी के सक्षम नेतृत्व का परिणाम है।

- सुषमा स्वराज

भाजपा को अपने दम पर स्पष्ट बहुमत मिलने के बावजूद हमसे जुड़ने की चाह रखनेवाली पार्टियों का हम स्वागत करेंगे और देश के विकास में मिलकर काम करेंगे।

- नितिन गडकरी

राजस्थान के इतिहास में विधानसभा में 163 और लोकसभा चुनाव में 25 की 25 सीटें पहली बार। ऐसे अभूतपूर्व जनादेश के लिए जनता का कोटि-कोटि आभार।

- वसुंधरा राजे, मुख्यमंत्री, राजस्थान

कांग्रेस नेताओं का व्यवहार अच्छा नहीं था। वे हमेशा आरोप लगाते रहे और अहंकार से भरे रहे जिसे जनता ने नापसंद किया।

- शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

जीत गई जनता, जीत गई भाजपा। भाजपा को विजयी बनाने के लिए आप सभी का आभार।

- डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

गांधी परिवार की सामूहिक नाकामी की वजह से देश भर में कांग्रेस को करारी हार मिली है।

- मनोहर पर्रिकर, मुख्यमंत्री, गोवा

समाचार-पत्रों की सुर्खियां

मोदी की सुनामी में बह गई कांग्रेस	- पंजाब केसरी
मोदी ने जीता भारत का दिल	- पायनियर
मोदी की महाविजय	- हिन्दुस्तान
अच्छे दिन आए	- नई दुनिया
अबकी बार चमत्कार	- नवभारत टाइम्स
नमो-नमो हिंदुस्तान	- अमर उजाला
देश की अब मोदी के हाथ	- दैनिक ट्रिब्यून
छप्पर फाड़-मोदी सरकार	- राष्ट्रीय सहारा
अब मोदी सरकार	- दैनिक जागरण
नमो भारत	- राजस्थान पत्रिका
मोदी मैजिक	- नेशनल दुनिया

संपादकीय टिप्पणियां

सोलहवें लोकसभा चुनावों में भाजपानीत राजग की शानदार जीत को हिंदी के प्रमुख राष्ट्रीय समाचार-पत्रों ने ऐतिहासिक बताते हुए इसका विश्लेषण किया है। संपादकीयों का मुख्य कथ्य है कि कांग्रेसनीत संप्रग शासन में कुशासन और भ्रष्टाचार से देशवासियों में असंतोष था और भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने आपको एक निर्णयक्षम और मजबूत नेता की तरह पेश किया और वे मतदाताओं के बीच परिवर्तन की उम्मीद बनकर उभरे। हम यहां प्रमुख संपादकीयों की कुछ पंक्तियां उद्धृत कर रहे हैं:-

मोदी के पक्ष में उनके विरोधियों को यह करारा जवाब आम जनता की ओर से दिया गया है। इसी के साथ उन्होंने खुद को सबसे लोकप्रिय, भरोसेमंद और अच्छे दिन की उम्मीद जगाने वाले नेता के रूप में भी-स्थापित कर लिया है।

- दैनिक जागरण

भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी इस समय लोकप्रियता के सर्वोच्च शिखर हैं। इसके पीछे वजहें क्या हैं? व्याख्याएं चाहे जितनी बड़ी की जाएं, वजह बहुत छोटी और साफ है, नेकनीयती के साथ देश को बचाने और बदलने की एक अदद मुहिम की दरकार। भ्रष्टाचार, लूट-खसोट, महंगाई से लगभग टूट चुके आम जनमानस को मोदी यह भरोसा देने में सफल रहे हैं कि उन्होंने गुजरात में जो करके दिखाया है, अब पूरे देश में करके दिखाएंगे।

- नेशनल दुनिया

अब कांग्रेस को अलविदा कहने का समय आ गया है और इसके स्थान पर किसी दूसरे मजबूत और जमीन से जुड़े हुए राजनीतिक दल के उदय का भी आ गया है। यह गौर से देखा जाना चाहिए कि लोगों ने भाजपा को अपना पूर्ण समर्थन इस देश में कुशासन और भ्रष्टाचार से मुक्ति के साथ ही नए प्रकार की साम्प्रदायिक राजनीति के खिलाफ भी दिया है।

- पंजाब केसरी

भाजपा की सबसे बड़ी ताकत यह रही कि उसने जनता के असंतोष को अचूक अभिव्यक्ति दी। नरेन्द्र मोदी ने अपने आप को एक निर्णयक्षम और मजबूत नेता की तरह पेश किया और लोगों को यह लगा कि इस दौर ने उन्हें इसी किस्म का नेता चाहिए।

- हिन्दुस्तान

नतीजों से जाहिर है कि लोगों ने मोदी को केन्द्र में मौका देने की इच्छा जताई है। देशभर में अपने धुंआधार प्रचार अभियान के दौरान वे लोगों, खासकर युवाओं में परिवर्तन की उम्मीद बनकर उभरे।

- जनसत्ता

आम चुनावों के नतीजों से साफ है कि जनता एक मजबूत और टिकाऊ सरकार चाहती है। उसने एक ऐसे नेता के प्रति समर्थन व्यक्त किया है जो अपने नजरिए को लेकर स्पष्ट है और जिसका व्यक्तित्व उम्मीदें जगाता है।

- नवभारत टाइम्स

बात सिर्फ उत्तर भारत की ही नहीं है, कमोबेश देशभर में ही राजग को मिली चुनावी सफलता का संदेश साफ है कि देश को इस या उस कारण से मजबूर नहीं, बल्कि ऐसी मजबूत सरकार चाहिए, जो युवा भारत की जन आकांक्षाओं पर खरी उतर सके।

- दैनिक ट्रिब्यून

संसद के केन्द्रीय सभागार में श्री नरेन्द्र मोदी का भाषण

मां की सेवा कृपा नहीं

नरेंद्र मोदी 20 मई को भाजपा संसदीय दल के नेता चुने जाने के बाद अपने सम्बोधन में भावुक हो गए। पार्टी को भी मां बताते हुए उन्होंने कहा कि बेटा कभी मां पर कृपा नहीं कर सकता। वह सिर्फ सेवा कर सकता है। उन्होंने नवनिर्वाचित सांसदों को यह भी याद दिलाया कि अब जिम्मेदारी का युग है। जनता की आशा-आकांक्षा को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित करने के लिए तैयार रहें।

मैं आप सबका बहुत-बहुत आभारी हूं कि आपने सर्वसम्मति से मुझे एक नया दायित्व दिया है। विशेष रूप से आडवाणी जी और राजनाथ जी का आभारी हूं। उन्होंने मुझे आशीर्वाद भी दिया। मैं सोच रहा था कि अटल जी का स्वास्थ्य अच्छा होता और आज वे यहां होते तो सोने में सुहागा होता।

भाईयों और बहनों, यह लोकतंत्र का मंदिर है। हम सब इस मंदिर में पूरी पवित्रता के साथ पद के लिए नहीं, सवा सौ करोड़ देशवासियों की आशा-आकांक्षाओं को समेट कर बैठे हैं। इसलिए पदभार जीवन में बहुत बड़ी बात होती है, ऐसा मैंने कभी नहीं माना। लेकिन कार्यभार, जिम्मेवारी ये सबसे बड़ी बात होती है और हमें उसे परिपूर्ण करने के लिए अपने आपको समर्पित करना होगा।

13 सितंबर को भारतीय जनता पार्टी की पार्लियामेंटरी बोर्ड ने, राजनाथ जी की अध्यक्षता में मेरे लिए जिम्मेवारी तय की। यह 13 तारीख को तय हुआ और 15 से मैंने अपना काम शुरू किया। 10 मई को जब चुनाव प्रचार समाप्त हुआ, मैंने अध्यक्ष जी को फोन किया। मैंने कहा मैं अहमदाबाद जाने से पहले दिल्ली आकर आपसे मिलना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि आप थके नहीं हो क्या अभी। मैंने कहा नहीं, मुझे रिपोर्ट करना है। उस वक्त मैं पूर्वी उत्तर प्रदेश में था, मैं दिल्ली पहुंचा, उनके पास गया। और एक अनुशासित सिपाही की तरह मेरे अध्यक्ष को मैंने रिपोर्ट किया कि जो काम दिया था, वह भली-भांति करने की कोशिश की।

जैसे यहां बताया गया कि मैं पहली बार यहां आया हूं। शायद मेरे जीवन में

हर बार ऐसा ही हुआ है। मुख्यमंत्री बना उसके बाद मैंने मुख्यमंत्री का चैंबर देखा।

मुख्यमंत्री बनने के बाद मैंने विधानसभा गृह देखा। आज भी ऐसा ही एक अवसर आया है। लेकिन हम इस ऐतिहासिक स्थान पर बैठे हैं। यह लोकतंत्र का मंदिर है। सवा सौ करोड़ देशवासियों की आशा, आकांक्षाएं इस पवित्र मंदिर पर टिकी हुई हैं और मैं आज देश को आजादी दिलाने वाले, आजादी के लिए मर मिटने वाले, आजादी के लिए जीने वाले, आजादी के लिए खपे हुए उन सभी महापुरूषों को प्रणाम करता हूं। उनकी बदौलत आज देश स्वतंत्रता की अपनी यात्रा पर आगे बढ़ा है। मैं भारत के संविधान निर्माताओं को भी प्रणाम करता हूं कि इस पवित्र संविधान के कारण लोकतंत्र की ताकत का परिचय दुनिया को हो रहा है। हमारे संविधान निर्माताओं ने देश को जो संविधान दिया उसकी ताकत देखिए कि एक गरीब परिवार का व्यक्ति आज यहां खड़ा है।

इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की जय, किसी की पराजय, ये मुद्दा अपनी जगह पर चर्चा का है। लेकिन इस चुनाव में भारत के सामान्य से सामान्य नागरिक के भीतर नए आत्मविश्वास का संचार हुआ है कि यही एक व्यवस्था है, जो हमारे सपनों को पूरा कर सकती है। लोकतंत्र के प्रति उसकी आस्था बढ़ी है। ये अपने आप में किसी भी राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी ताकत होती है। लेकिन भाईयों और बहनों, आखिरकार सरकार किसके लिए? मैं स्पष्ट मानता हूं कि सरकार वो हो, जो गरीबों के लिए सोचे। सरकार वो हो जो गरीबों को सुने। सरकार वो हो जो गरीबों के लिए जिए।

भाईयों और बहनों, आडवाणी जी ने एक शब्द प्रयोग किया, मैं आडवाणी जी से प्रार्थना करता हूं कि वे इस शब्द का उपयोग न करें।

उन्होंने कहा, नरेंद्र भाई ने कृपा की।.....

क्या मातृ सेवा कभी कृपा हो सकती है, कतई नहीं हो सकती। जैसे भारत मेरी मां है, वैसे ही भाजपा भी मेरी मां है। बेटा कभी मां पर कृपा नहीं कर सकता, बेटा सिर्फ समर्पित भाव से मां की सेवा कर सकता है। कृपा तो पार्टी ने की है कि इस मां की सेवा करने का मुझे अवसर दिया।

इसलिए नई सरकार देश के गरीबों को समर्पित है, देश के कोटि कोटि युवकों को समर्पित है और मान सम्मान के लिए तरसती हमारी मां-बहनों को समर्पित है। गांव हो, गरीब हो, किसान हो, दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, ये सरकार उनके लिए है। हम सबकी प्राथमिकता उनकी आशा और उनकी आकांक्षा की पूर्ति करना हो। यही हमारा प्रयास रहेगा और हम सबकी भी वही जिम्मेवारी है क्योंकि हमें गरीब से गरीब आदमी ने यहां भेजा है। मैंने चुनाव प्रचार अभियान में ऐसे लोग देखे हैं जिनके शरीर पर एक ही वस्त्र था, फिर भी कंधे पर भाजपा का झंडा दिख रहा था। ये तबका कितनी आशाओं और अपेक्षाओं के साथ हमारे पास आया है। इसलिए हमारे सपने हैं, उनके सपनों को सच करने के लिए।

भाईयों और बहनों, आडवाणी जी ने एक शब्द प्रयोग किया, मैं आडवाणी जी से प्रार्थना करता हूं कि वे इस शब्द का उपयोग न करें। उन्होंने कहा, नरेंद्र भाई ने कृपा की। क्या मातृ सेवा कभी कृपा हो सकती है, कतई नहीं हो सकती। जैसे भारत मेरी मां है, वैसे ही भाजपा भी मेरी मां है। बेटा कभी मां पर कृपा नहीं कर सकता, बेटा सिर्फ समर्पित भाव से मां की सेवा कर सकता है। कृपा तो पार्टी ने की है कि इस मां की सेवा करने का मुझे अवसर दिया।

भाईयों और बहनों, मैं कभी ये सोच नहीं रखता हूं कि पुरानी सरकारों ने कुछ नहीं किया होगा और न ही भाजपा का कोई कार्यकर्ता ऐसी सोच रखता है। देश आजाद हुआ तब से जितनी भी सरकारें आई, उन्होंने अपने तरह से देश की सेवा करने का प्रयास किया है। अपनी तरह से देश को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। जो-जो अच्छा हुआ, उसके लिए वे सभी सरकारें और उनका नेतृत्व करने वाले बधाई के पात्र हैं। हमारा दायित्व है, अच्छाई को लेकर आगे बढ़ें और अधिक अच्छा करने का प्रयास करें। हम भी देश को कुछ देकर जाएं। सामान्य नागरिक की आशा, आकांक्षाओं के अनुरूप हम कुछ करके जाएं। अगर हमारे मन का ये भाव रहा तो देशवासियों को निराश होने की नौबत नहीं आएगी। अगर देश की जनता ने हंग पार्लियामेंट बनाई होती। फ्रैक्चर्ड मैंडेट दिया होता, तो ये कह सकते थे कि सरकार के प्रति

सिर्फ गुस्से का कारण था या एंटी एस्टैबलिशमेंट भाव था। वो तब होता जब सिर्फ फ्रैक्चर्ड मैंडेट होता। लेकिन भारतीय जनता पार्टी को संपूर्ण बहुमत देने का मतलब होता है कि लोगों ने आशा और विश्वास के लिए मतदान किया है।

2013 में हमारी राष्ट्रीय परिषद मिली थी, तालकटोरा स्टेडियम में। गुजरात में हम एक बार फिर सरकार बनाकर आए थे। पार्टी ने हम लोगों का बड़ा सम्मान किया था। उस दिन मैंने कहा था कि हम चलें या न चलें, देश चल पड़ा है। आज इतनी बड़ी संख्या में सेंट्रल हॉल भाजपा के समर्पित सेनानियों से भरा पड़ा है। उसका कारण है, देश चल पड़ा है, हम चलें या न चलें।

भाईयों और बहनों, ये उमंग, ये उत्साह चलता रहेगा लेकिन जिम्मेदारी का युग शुरू हो गया है। शायद इस सभागृह में मेरी तरह बहुत से लोग होंगे, जो आजाद हिंदुस्तान में पैदा हुए। शायद देश में भी पहली बार आजाद हिंदुस्तान में पैदा हुए किसी व्यक्ति के नेतृत्व में सरकार बनेगी। हमें आजादी के जंग लड़ने का सौभाग्य नहीं मिला है। हमें देश के लिए मर मिटने का सौभाग्य नहीं मिला है। हमें देश के लिए जेलों में जवानी खपाने का सौभाग्य नहीं मिला लेकिन कोटि-कोटि जनों ने हमें देश के लिए जीने का अवसर जरूर दिया है। देश के लिए हम भले मर ना पाए, देश के लिए हम भले जूझ ना पाए, देश के लिए भले हमें अत्याचार झेलने का अवसर नहीं मिला लेकिन आजाद हिन्दुस्तान में पैदा हुए हर व्यक्ति के लिए जीवन का संकल्प होना चाहिए, देश के लिए जीएंगे। अगर हम ये सपना लेकर चलते हैं तो देश बहुत तेजी से संकट से बाहर निकल कर आगे बढ़ना शुरू कर देता है।

मैं स्वभाव से आशावादी व्यक्ति हूं, मेरे जीवन में निराशा नहीं है। एक बार एक कॉलेज में भाषण हुआ था तो एक बात कही थी। आज मुझे वो बात एक बार फिर से कहने का मन कर रहा है। मैंने कहा कि कोई इस गिलास के सम्बन्ध में बताओ तो किसी ने कहा ये

आधा भरा है, कोई कहता है ये आधा खाली है। मेरी सोच तीसरे प्रकार की है। मैं कहता हूं ये गिलास आधा पानी से भरा है और आधा हवा से भरा है। आपको खाली नजर आता है, मुझे हवा से भरा नजर आता है और इसलिए मैं कहता हूं मैं बहुत ही आशावादी व्यक्ति हूं। सकारात्मक मार्ग के लिए आशावादी होना बहुत ही जरूरी है। आशावादी व्यक्ति ही देश में आशा का संचार कर सकते हैं। निराशावादी व्यक्ति कभी देश में आशा का संचार नहीं कर सकता है। संकट आते हैं, किस पर नहीं आए जीवन में? मुझे याद है 2001 में गुजरात का भयंकर भूकम्प। हम मौत की चादर ओढ़ कर सोए थे और पूरा विश्व मानता था कि अब गुजरात खत्म। देखते ही देखते वो खड़ा हो गया और दौड़ पड़ा। मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमें निराशा छोड़नी होगी। पुराने अनुभव कितने ही बुरे क्यों न हों? उसके आधार पर निराश मन को लेकर चलने की आवश्यकता नहीं है।

सवा सौ करोड़ देशवासी एक कदम चलें, तो देश सवा सौ करोड़ कदम आगे बढ़ जाएगा। दुनिया में कौन सा ऐसा देश है जहां पर छः ऋतुएं हैं। हम ही तो हैं, ईश्वर की इतनी बड़ी कृपा है हम पर। प्राकृतिक संपदाओं से भरी हुई हमारी धरा उर्वरा है। यहां के लोग जब बाहर जाते हैं तो दुनिया में नाम कमाते हैं। बस, उन्हें अवसर देने की देर है, शक्ति तो उनके भीतर पड़ी हुई है। अगर ये अवसर देने के भाव से हम आगे बढ़े। इस चुनाव में हमने दो बातों पर बहुत बल दिया, उन बातों को लेकर हमें आगे बढ़ना है और वो है सबका साथ, सबका विकास। हम सबका विकास चाहते हैं लेकिन सबका साथ उतना ही अनिवार्य है। उस मंत्र को लेकर हम आगे बढ़ना चाहते हैं। भाईयों और बहनों, ये चुनाव एक नई आशा का चुनाव है, ऐसे सामर्थ्यवान साथी मुझे मिले हैं।

मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि जब 2019 में हम मिलेंगे तो मैं आपको और देशवासियों को फिर अपना रिपोर्ट कार्ड दूंगा। परिश्रम की पराकाष्ठा करूंगा। अपने लिए नहीं देश के लिए

जिऊंगा।

भाईयों और बहनों, 2015-2016 पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का शताब्दी वर्ष है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने हमें जो रास्ता दिखाया था उसमें विचार से ज्यादा ताकत आचरण की थी। उसको हम कैसे निभाएं? पंडित दीनदयाल जी के शताब्दी पर्व के लिए पार्टी भी सोचे, सरकार भी। दरिद्र नारायण की सेवा, अंत्योदय। ये विचार पंडित जी ने हमें दिया है।

वैश्विक परिवेश में भारत के चुनाव नतीजे को बहुत सकारात्मक रूप से देखा जा रहा है । जो पहला संदेश जाता है वो विश्व में भारत का रूतबा पैदा करता है। देश के कोटि-कोटि जनों ने किसी दल की सरकार या किसी व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाया हो, ऐसा नहीं है। देश के कोटि-कोटि जनों ने यह जनादेश देकर विश्व के सामने भारत का सिर ऊंचा करने का अवसर पैदा किया। इस चुनाव को कौन जीता, कौन हारा, उस दायरे में देखने का समय चला गया। ये वो नतीजे हैं, जो विश्व को भारत की लोकतांत्रिक सामर्थ्य की तरफ आकर्षित करते हैं।

कभी हम ऐसी गलती न करें। देखिए मुझे टिकट दिया तो कैसे जीत गया, उसे मिलता तो नहीं जीतता। ऐसे भ्रम में ना रहें।

आज हमने जो कुछ भी पाया है वो पांच-पांच पीढ़ी खप गई हैं तब पाया है। मैं आज उन सभी पीढियों को जिन्होंने राष्ट्रवादी विचार को लेकर के अपने-अपने तरीके से तपस्या की है, जीवन खपाए हैं, उनको नतमस्तक होकर नमन करता हूं। हम आज अपने कारण यहां नहीं हैं। उनकी तपस्या के कारण हैं।

अगर इतना सा मन में हमेशा बना रहा तो मैं नहीं मानता हूं कि हमें कभी भी समाज के लिए, दल के लिए, साथियों के लिए शिकायत का अवसर आएगा। हमारी ताकत संगठन है, हममें से कोई न संगठन से ऊपर है ना संगठन से परे है, वही हमारे लिए सर्वोपरि है, इसी भाव को लेकर के हम आगे की जिम्मेवारियों को निभाएंगे। आप सबने मुझे एक नई जिम्मेदारी दी है, मैं भली-भांति पूरी कोशिश करूंगा कि आपने मुझसे जो अपेक्षाएं की हैं उनमें कभी भी आपको नीचा देखने का अवसर नहीं आए। फिर एक बार आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद, धन्यवाद । ■

भाजपा और एनडीए के नेता चुने गए नरेंद्र मोदी

गत 20 मई को संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेंद्र मोदी को पार्टी और एनडीए संसदीय दल का नेता चुन लिया गया। बैठक में भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने पार्टी संसदीय दल के नेता के रूप में श्री नरेंद्र मोदी के नाम का प्रस्ताव रखा और भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी व श्री वेंकैया नायडू ने इसका अनुमोदन किया। भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

इस दौरान केंद्रीय कक्ष भाजपा सांसदों और नेताओं की तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने सर्वसम्मति से श्री नरेंद्र मोदी को चुने जाने की घोषणा की। श्री मोदी ने इस मौके पर सांसदों का आभार जताया और भावुक होकर कहा कि अगर अटल जी का स्वास्थ्य अच्छा होता और वह यहां मौजूद होते तो सोने पर सुहागा होता। श्री आडवाणी द्वारा दिए गए भाषण में 'हमें नरेंद्र भाई की कृपा से यह मौका मिला है' कहे जाने का जिक्र करते हुए श्री मोदी भावुक हो गए और मुश्किल से आंसू रोक पाए। उन्होंने कहा कि बेटा कभी मां पर कृपा नहीं करता है। श्री मोदी ने कहा कि मातृभूमि की तरह पार्टी भी मेरी मां है, मां की सेवा कृपा नहीं है।

भाजपा संसदीय दल की बैठक के तुरंत बाद एनडीए की बैठक हुई और इसमें भी श्री मोदी औपचारित रूप से नेता चुने गए। अंत में श्री मोदी ने सभी सहयोगी पार्टियों का आभार जताया। ■

अबकी बार चमत्कार

✍ बलबीर पुंज

2014 के जनादेश का स्पष्ट संदेश क्या है? कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक एक ही जनमानस ने काम किया कि इस विकट स्थिति में भारतीय जनता पार्टी ही देश की दशा और दिशा बदलने के लिए एकमात्र विकल्प है। जिन क्षेत्रों में भाजपा की उपस्थिति नहीं थी वहां भी भाजपा का जनाधार और मत प्रतिशत बढ़ा है। भाजपा का विजय अभियान दक्षिण भारत में कर्नाटक से आगे बढ़ता हुआ अंडमान-निकोबार तक तक जा पहुंचा। केरल में भाजपा नीत राजग का मत प्रतिशत बढ़ा है, यहां उसे 10.30 प्रतिशत मत मिले हैं। पश्चिम बंगाल में भाजपा को दो सीटों पर जीत हासिल हुई है। जम्मू-कश्मीर की छह सीटों में से राजग को तीन सीटें मिली हैं, असम की 14 में से 7 सीटों पर भाजपा विजयी हुई है, अर्थात् इन दोनों जगहों पर 50 प्रतिशत मतदान राजग के पक्ष में हुआ। इसलिए यह जनादेश वस्तुत: भाजपा के पक्ष में राष्ट्रव्यापी ज्वार का ही प्रमाण है।

तमाम तथाकथित सेक्युलर दल 'सेक्युलरवाद खतरे में है' के नारे के साथ भाजपा के प्रधानमंत्री प्रत्याशी नरेंद्र मोदी का रास्ता रोकने के लिए लामबंद थे, वह नारा पूरी तरह विफल हो गया। सेक्युलरवाद के नाम पर कथित सेक्युलरिस्टों ने दशकों तक अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति चलाई, बाद में उन्होंने अल्पसंख्यकों के कट्टरवादी वर्ग को पोषित और संरक्षण देने का काम किया और अब सेक्युलरवाद के नाम पर वे आतंकवादियों के साथ खड़े नजर आते हैं। सेक्युलर कुनबा जांच एजेंसियों और सुरक्षा बलों को कठघरे में खड़ा कर उन पर अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न का आरोप लगाता है। देश के गृहमंत्री पद पर बैठने वाला व्यक्ति राज्य सरकारों से आतंकवाद के सिलसिले में गिरफ्तार युवा मुस्लिमों की न केवल अविलंब रिहाई सुनिश्चित करने, बल्कि उन्हें मुआवजा देने की अपील करता है। इस विकृत सेक्युलरवाद को लोग देख रहे थे। इसीलिए इस देश की बहुलतावादी संस्कृति और पंथनिरपेक्षता पर भरोसा करने वाले हिंदू और मुसलमान, दोनों ने मिलकर भाजपा को देश की कमान सौंपी है। इस चुनाव में मतदाताओं ने क्षेत्रवाद, जातिवाद और संप्रदाय की राजनीति करने वालों को सिरे से नकार दिया। कथित 'सोशल इंजीनियरिंग' के बूते सन् 2007 में उत्तर प्रदेश की सत्ता कब्जाने वाली बहुजन समाज पार्टी की नेत्री मायावती इस बार अपना खाता तक नहीं खोल पाई। पिछली बार बसपा को 19 सीटें मिली थीं, जो इस बार भाजपा के खाते में चली गई। उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल की 57 सीटें दलित बाहुल्य हैं। भाजपा को 40 सीटों पर जीत दिलाकर दलित समाज ने उस पर अपना विश्वास व्यक्त करने के साथ दशकों से दलित उत्थान के नाम पर उनका दोहन करने वालों को दरकिनार कर दिया है। सन 2012 में अल्पसंख्यकों के भय और भावनाओं का दोहन कर समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश की सत्ता पर लौटी, किंतु इस बार उसे अल्पसंख्यकों का सहारा नहीं मिला। इसी तरह खुद को जाट हृदय सम्राट कहने वाले अजित सिंह न तो अपनी और न ही अपने बेटे की सीट बचा पाए। जाटों ने आरक्षण के लॉलीपॉप को नकार कर देश को प्राथमिकता दी।

2014 के जनादेश का स्पष्ट संदेश क्या है? कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक एक ही जनमानस ने काम किया कि इस विकट स्थिति में भारतीय जनता पार्टी ही देश की दशा और दिशा बदलने के लिए एकमात्र विकल्प है। जिन क्षेत्रों में भाजपा की उपस्थिति नहीं थी वहां भी भाजपा का जनाधार और मत प्रतिशत बढ़ा है। भाजपा का विजय अभियान दक्षिण भारत में कर्नाटक से आगे बढ़ता हुआ अंडमान-निकोबार तक तक जा पहुंचा।

कश्मीर को अपनी मिल्कियत समझने वाले नेशनल कांफ्रेंस को लोगों ने सिरे से नकार दिया है। यहां सत्ताधारी गठबंधन के नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया। श्रीनगर सीट नेशनल कांफ्रेंस का अभेद्य गढ़ माना जाता है, यहां फारुक अब्दुल्ला को 42 हजार से अधिक मतों से शिकस्त मिली है, जिन्होंने चुनाव प्रचार के दौरान यह धमकी दी थी कि यदि भारत सेक्युलर नहीं रहा तो जम्मू-कश्मीर भारत का

हिस्सा नहीं रहेगा। भाजपा ने जम्मू की दोनों सीटों के अलावा लद्दाख सीट जीतकर कुल 6 में से 3 सीटें अपने नाम कर लीं। धारा 370 के माध्यम से सेक्युलरिस्टों ने जम्मू-कश्मीर में जिस अलगाववाद को पोषित किया है, यह उसी का प्रतिकार है। 17 साल तक भाजपा के साथ गठबंधन में रहे जदयू ने कथित सेक्युलरवाद के नाम पर भाजपा से नाता तोड़ लिया था। स्वयंभू 'विकास पुरुष' नीतीश कुमार को जनता ने उनकी हदें याद दिला दीं। 40 लोकसभा सीटों वाले बिहार में जदयू केवल दो सीटों पर ही जीत हासिल कर सकी है। नरेंद्र मोदी को रोकने के लिए वाराणसी जाकर 'आप' को समर्थन देने वाले जदयू के शरद यादव स्वयं अपनी सीट नहीं बचा पाए।

पिछड़े वर्ग की बहुलता वाली सीटों का ज्यादा प्रभाव बिहार और उत्तर प्रदेश में है। उत्तर प्रदेश की 30 और बिहार की 9 सीटों पर इस वर्ग की निर्णायक भूमिका थी। उत्तर प्रदेश में भाजपा को इन सीटों में से 25 और बिहार में 4 सीटों पर जीत मिली है। कमजोर वर्ग के प्रभाव वाली 170 सीटों में भाजपा को 98 सीटों पर जनता का आशीर्वाद मिला है। मुस्लिम-यादव के बूते लालू यादव ने भाजपा को रोकने का दावा किया था। बिहार में 17 सीटें ऐसी थीं, जहां मुस्लिम और यादव का संयुक्त मत प्रतिशत 30 प्रतिशत से अधिक है। भाजपा इन 17 सीटों में से 12 में विजयी रही वहीं लालू प्रसाद यादव न तो अपनी पत्नी और न ही अपनी बेटी को जीत दिला पाए। इस चुनाव में कांग्रेस को शर्मनाक पराजय का मुंह देखना पड़ा है। पिछले दस सालों में कांग्रेस ने खोखले वादों और नारों से जो तिलिस्म खड़ा किया था, यह उसका तार्किक पतन है। 1971 में इंदिरा गांधी 'गरीबी हटाओ' का जो नारा लगाती थीं, उनका पोता आज भी उन्हीं नारों को दोहराता है। कांग्रेस वादे कर सत्ता भोगती आई है, उन्हें पूरा करने की प्रतिबद्धता उसमें कभी नहीं रही। लोगों ने इस सच्चाई को समझा और गुजरात के विकास मॉडल को चुना, जिसमें बिना किसी भेदभाव के समाज का समग्र विकास पहली प्राथमिकता है। कांग्रेस ने मतदाताओं में मोदी के आने का भय दिखाकर उनमें डर और निराशा पैदा करने की कोशिश की, जबकि मोदी ने उज्ज्वल भविष्य का खाका खींच उनमें आशा और उमंग का संचार किया। इस चुनाव में 'आप' का बुलबुला भी फूट गया है। दिल्ली की तत्कालीन कांग्रेसी सरकार के कुशासन से ऊब चुकी जिस जनता ने विधानसभा चुनावों में 'आप' को माथे पर बिठाया था, लोकसभा चुनाव में उसे धरातल पर ला फेंका। उसे पंजाब की केवल चार सीटों पर स्थानीय कारणों से जीत हासिल हुई है। राष्ट्रीय स्तर पर 'आप' को केवल 4 प्रतिशत मत मिले हैं, जो उसके अवसान का संकेत है।

जनवरी, 2014 से मोदी ने देश भर में चुनाव रैलियों का शुभारंभ किया। उन्होंने रोज 13 घंटे से अधिक प्रचार किया। देशभर में 477 रैलियां कर करीब तीन लाख किलोमीटर की यात्रा की। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक 29 करोड़ लोगों तक प्रत्यक्ष पहुंचे, वहीं सोशल मीडिया और चाय पर चर्चा के माध्यम से प्रत्येक भारतवासी से जुड़ने का प्रयास किया।

यह नरेंद्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व का ही परिणाम है। भाजपा कभी भी लोकसभा में 182 सीटों से अधिक नहीं ला पाई। किसी को यह अनुमान नहीं था कि 2014 में भाजपा अपने बलबूते बहुमत ले आएगी। यह प्रचंड बहुमत 'अबकी बार मोदी सरकार' की सत्यता और सार्थकता के साथ एक चमत्कार से कम नहीं है।■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं)

(साभार- दै. जागरण)

पिछड़े वर्ग की बहुलता वाली सीटों का ज्यादा प्रभाव बिहार और उत्तर प्रदेश में है। उत्तर प्रदेश की 30 और बिहार की 9 सीटों पर इस वर्ग की निर्णायक भूमिका थी। उत्तर प्रदेश में भाजपा को इन सीटों में से 25 और बिहार में 4 सीटों पर जीत मिली है। कमजोर वर्ग के प्रभाव वाली 170 सीटों में भाजपा को 98 सीटों पर जनता का आशीर्वाद मिला है। मुस्लिम-यादव के बूते लालू यादव ने भाजपा को रोकने का दावा किया था। बिहार में 17 सीटें ऐसी थीं, जहां मुस्लिम और यादव का संयुक्त मत प्रतिशत 30 प्रतिशत से अधिक है।

यह नरेंद्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व का ही परिणाम है। भाजपा कभी भी लोकसभा में 182 सीटों से अधिक नहीं ला पाई। किसी को यह अनुमान नहीं था कि 2014 में भाजपा अपने बलबूते बहुमत ले आएगी। यह प्रचंड बहुमत 'अबकी बार मोदी सरकार' की सत्यता और सार्थकता के साथ एक चमत्कार से कम नहीं है।

मिशन 272+
नरेन्द्र मोदी की महान उपलब्धि

✍ मुरलीधर राव

किसी भी राष्ट्र के जीवन में ऐसे अविस्मरणीय पल आते हैं जिससे वह अपने भविष्य की दिशा को बदल देता है। 16वां आम चुनाव कुछ इन्हीं पलों का स्मरण कराता है। स्वतंत्रता के बाद पहली बार किसी राजनैतिक पार्टी ने सुशासन के मुद्दे मात्र पर इतना भारी जनादेश मांगा और उसमें विजय प्राप्त की।

प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने यूपीए की विफलता के बारे में अपने समाचार पत्रों में हजारों कागज के रीम खर्च कर डाले और लाखों-लाखों 'साउंड बाइट्स' दिखा डाले, अत: इस बिन्दु पर मेहनत करना बेकार ही होगा। यूपीए के खिलाफ व्यापक आक्रोश को मोदी-लहर में बदलना एक बड़ी भारी चुनौती थी। भाजपा के राजनैतिक विरोधियों ने मोदी लहर को मीडिया की देन और पैसा देकर इसका निर्माण करने की संज्ञा दे डाली थी। परन्तु हमारे ये विरोधी भाजपा की परिवर्तित टीम के कठोर परिश्रम, रणनीति, योजना और उसके अमल जैसे विचारों को समझ ही नहीं पाए।

श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में ऐतिहासिक और विशाल प्रचार-अभियान ने बदलाव की राष्ट्रव्यापी गूंज बनकर सामने आया जिसने यूपीए को सत्ता से हटा दिया गया और उसकी जगह एक स्थिर और कर्मयोगी सरकार बनी। भाजपा का अभियान दो धाराओं में मुखरित हुआ। इसका प्रथम पहलू तो सभी मोर्चों पर यूपीए सरकार की विफलताओं को उजागर करना था और दूसरे मतदाताओं को भरोसा दिलाना था कि भाजपा ही एक-मात्र विकल्प है।

कांग्रेस के विपरीत भाजपा की निहित शक्ति हमेशा यही रही है कि यह कैडर-आधारित पार्टी रही है। और आज तक भी यह ऐसी पार्टी है जिसने कभी भी विभाजन का मुंह नहीं देखा। पहले तो नरेन्द्र मोदी को प्रचार समिति का मुखिया बनाना और फिर उन्हें प्रधानमंत्री प्रत्याशी बनाने का निर्णय किसी एक परिवार या किसी चौकड़ी का नहीं था, बल्कि यह जमीनी समर्थन के आधार पर हुआ था जिसके पास लोगों ने गुजरात में हुए विकास के ट्रैक-रिकार्ड को देखा था। मतदाओं ने स्वयं देखा कि भाजपा-शासित राज्यों और केन्द्र की यूपीए सरकार में कितना भारी अंतर है। केन्द्र में रही राजग सरकार के रिकार्ड ने इस भरोसे को और भी बढ़ा दिया।

श्री नरेन्द्र मोदी ने युवा भारत की महत्वाकांक्षाओं के साथ स्वयं की पहचान बना ली थी। 21वीं शताब्दी को भारत के दशक के नाम से जाना गया, परन्तु यूपीए सरकार ने भारत की विकास गाथा को समाप्त करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने लोगों की भावनाओं को सही ढंग से समझा और युवाओं से सम्पर्क किया। राहुल गांधी के मुकाबले वह युवा-मूर्ति बन कर सामने आए जबकि राहुल गांधी तो उनसे 20वर्ष छोटे हैं- इसी से सब स्पष्ट हो जाता है। इस प्रकार एक दूसरी बात सामने आती है कि जब 1971 में इन्दिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया था जो आजतक सफल नहीं हुआ। क्योंकि मीडिया का एक वर्ग भाजपा के प्रति शत्रु-भाव रचाता था, इसलिए हमने युवाओं के सोशल मीडिया के साथ सीधे सम्पर्क रखा।

जब नरेन्द्र मोदी को पहले प्रचार समिति का मुखिया और बाद में प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी किए जाने की घोषणा हुई तो बहुत से लोगों ने इसे एनडीए (अर्थात् भाजपा) का अंत मान लिया था। जब मोदी की प्रधानमंत्री प्रत्याशी की नियुक्ति के तुरंत बाद हमारे चार पुराने सहयोगियों में से एक ने साथ छोड़ दिया तो राजग को तीन पार्टियों की सहयोगी का मजाक उड़ाया गया। परन्तु, इन सभी बातों को गलत साबित करते हुए भाजपा ने चुनाव से पहले 25 पार्टियों का गठबंधन तैयार कर लिया था। इसी के कारण भाजपा सभी सामाजिक समूहों और राजनैतिक क्षेत्रों में विस्तृत हो गई।

यह चुनाव पिछले सभी चुनावों से हर तरह से एकदम भिन्न रहा है। भाजपा-नीत राजग पहले 1998 और 1999 में सत्ता में आई थी। परन्तु, उस समय भारतीय राजनीति का केन्द्र बिन्दु रामजन्म भूमि अभियान से प्रेरित था। अटल बिहारी वाजपेयी जैसे व्यक्तित्व राजग को निर्णायक जनादेश दिलाने में मदद की। जेपी आंदोलन के कारण जनता पार्टी ने 1977 का चुनाव जीता था और 1989 का चुनाव सिर्फ बोफोर्स

मुद्दे और राजीव गांधी की महत्वाकांक्षाएं पूरी न कर पाने का कारण बना रहा। अत: यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के बाद पहली बार भारतीय मतदाताओं ने केवल सुशासन के मुद्दे पर मतदान किया।

यह जानते हुए कि कांग्रेस सुशासन के मुद्दे पर मतदाताओं का सामना नहीं कर पाएगी, उसने भाजपा अभियान को समाप्त करने के लिए हर प्रकार की चालबाजियां कीं। परन्तु, वह यहां भी विफल रही, जब कि उसे मीडिया के एक वर्ग और छद्म-सेक्युलरिस्टों का खूब साथ मिला। इन बाधाओं के बावजूद भी यह श्रेय भाजपा को जाता है कि उसने एक वर्ष तक इस 'टेम्पो' को निरन्तर बनाए रखा। नि:संदेह यह पूरा श्रेय पार्टी नेता नरेन्द्र मोदी को जाता है जिन्होंने यूपीए सरकार के खिलाफ अपने अभियान को सफलतापूर्वक पूरा किया।

शायद नरेन्द्र मोदी पहले राजनेता है जिन्होंने सीबीआई पूछताछ, विभिन्न एजेंसियों की जांच, बदनाम करने का अभियान, डिप्लोमैटिक बाधाएं, मीडिया का पूर्वाग्रह और अथक आरोपों के बीच सभी चुनौतियों का हर प्रकार से सामना किया। नरेन्द्र मोदी की इन चुनौतियों के बावजूद उन्होंने अपना साहस बनाए रखा देश के लोगों ने इन सभी गलत बातों को नकारते हुए उनका समर्थन किया। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि देश की आवश्यकताओं की हृदय से इच्छा रखने के कारण उनके कदम बढ़ते गए। उन्होंने 3 लाख कि.मी. से अधिक की यात्रा की और अपने अभियान में जमीनी वास्तविकताओं को सामने रखते हुए अपने कठोर परिश्रम से सफलता प्राप्त की। 'कांग्रेस मुक्त भारत' और 'इण्डिया 272+' प्रचार सम्बन्धी धारणाएं लोगों के मूड से ही प्राप्त हुई थीं। महत्वाकांक्षी भारत के लिए मोदी पर पूरी उम्मीदे बनी हुई हैं। गरीबों, दलितों, युवाओं के लिए आशा है कि उनके सपने साकार हो सकेंगे। आज देश विकास और समृद्धि के एक नए उत्साह से प्रेरित हुआ है। यह केवल भाजपा की विजय नहीं है, बल्कि यह भारत और विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की विजय है। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री हैं)

आनन्दीबेन बनीं गुजरात की मुख्यमंत्री

22 मई को श्रीमती आनन्दीबेन पटेल ने गुजरात की पहली महिला मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की।

73 वर्षीय श्रीमती पटेल श्री मोदी के मंत्रिमंडल में राजस्व, नगर विकास और आपदा-प्रबंधन मंत्री थीं। गुजरात की राज्यपाल श्रीमती कमला बेनीवाल ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

श्रीमती पटेल के साथ केबिनेट रैंक के छह मंत्रियों ने भी इस समारोह में शपथ ग्रहण की जिसमें भाजपा के दिग्गज नेता मौजूद थे जिनमें प्रधानमंत्री-निर्वाचित श्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह, श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री मुरली मनोहर जोशी, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री वेंकैया नायडू और श्री नितिन गडकरी शामिल हैं। शिरोमणि अकाली दल के पंजाब के मुख्यमंत्री श्री प्रकाश सिंह बादल, जो राजग गठबंधन में शामिल हैं, और भाजपा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान (मध्यप्रदेश), वसुंधरा राजे सिंधिया (राजस्थान) और रमन सिंह (छत्तीसगढ़) भी इस अवसर पर उपस्थिति थे।

12 वर्षों तक सत्ता में मुख्यमंत्री के रूप में रहते हुए श्री मोदी के त्यागपत्र देने के बाद 21 मई को श्रीमती पटेल को गुजरात भाजपा विधानमण्डल दल का नेता चुना गया था। जिन छह केबिनेट मंत्रियों को शपथ दिलाई गई, उनमें श्री नितिन पटेल, श्री रमन वोरा, श्री भूपेन्द्र सिंह चूडासामा, श्री सौरभ पटेल, श्रीगणपंत वासवा और श्री बाबू बोखारिया शामिल है। जिन्हें राज्यमंत्रियों के रूप में शपथ दिलाई गई, उनमें श्री दिलीप ठाकुर, बासुबेन त्रिवेदी, श्री प्रदीप सिंह जडेजा, श्री छत्रसिंह मोरी, श्री जयद्रथ सिंह परमार, श्री रंजनीकांत पटेल, श्री गोविन्द पटेल, नानू वनानी, जयन्ती कवाड़िया और श्री जयेश राडादिया शामिल हैं। राज्य मंत्रियों के रूप में चार नए चेहरे हैं- वे हैं श्री शंकर चौधरी, श्री ताराचंद चेड़ा, श्री बच्चुभाई खंबाड और कांति गामित। ■

अहमदाबाद/वड़ोदरा : विजय रैली

जनता के भरोसे को टूटने नहीं दूंगा : नरेंद्र मोदी

भाजपा की शानदार जीत के बाद 16 मई को अहमदाबाद में आयोजित विजय रैली को संबोधित करते हुए श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि वह जनता के भरोसे को टूटने नहीं देंगे और 21वीं सदी को भारत का बना देंगे। श्री मोदी ने कहा कि वह हारे हुए लोगों के साथ भी पक्षपातपूर्ण रवैया नहीं अपनाएंगे। उन्होंने कहा कि वह सभी दलों को साथ लेकर चलेंगे।

श्री मोदी ने कहा कि मेरे जीवन का यह पहला चुनाव है कि मैंने अहमदाबाद में कोई रैली नहीं की और यही मेरी सफलता है। उन्होंने कहा कि वोट बैंक का खेल खेलने वालों ने विकास पर चुनाव नहीं लड़ा, लेकिन हमने विकास और गुड गवर्नेंस पर चुनाव लड़ा। श्री मोदी ने कहा कि युवाओं ने जातिवाद को तोड़ दिया और इस चुनाव में जाति से ऊपर उठकर वोट डाले।

श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अब तोड़ने की राजनीति का खेल खत्म हो चुका है और आज से जोड़ने की राजनीति शुरू होगी। उन्होंने कहा कि अब नए समाजशास्त्र की शुरुआत हुई है। उन्होंने कहा कि पहली बार देश की जनता ने एक दल भाजपा को सरकार बनाने का मौका दिया है, पूरे बहुमत के साथ दिया है।

श्री मोदी ने कहा कि यह भारत के लोकतंत्र की ताकत है कि मुझ जैसे गरीब परिवार के बच्चे को सिर पर बिठा लिया। उन्होंने कहा, 'आप लोगों का मुझ पर पूरा अधिकार है। हम आपके भरोसे कभी टूटने देंगे। देशवासियों के विश्वास को चोट नहीं पहुंचेगी। यह मैं देश को विश्वास दिलाना चाहता हूं।' श्री मोदी ने कहा कि अगर मुझसे कुछ कमी रह जाए तो समझना कि मुझसे सीखने में कुछ कमी रह गई है।

श्री नरेंद्र मोदी ने साफ किया कि

वह हारे लोगों को नीचा नहीं दिखाएंगे। उन्होंने कहा, 'जनता ने यह जनादेश किसी को नीचा दिखाने के लिए नहीं दिया। हमारे लिए उन पार्टियों का भी उतना ही महत्व है, जितना किसी बड़ी पार्टी का। मैं जानता हूं वे भी देश हित में काम करना चाहते हैं।' श्री मोदी ने कहा कि यह भारत माता अकेले मोदी या बीजेपी की नहीं है, यह 125 करोड़ देशवासियों की है।

इससे पहले वड़ोदरा में जनता का अभिनंदन करने पहुंचे श्री मोदी ने कहा कि राजनीति में कोई दुश्मन नहीं होता। राजनीति में केवल प्रतिस्पर्धा होती है। यह लोकतंत्र की ताकत है। मैं देश को आगे ले जाने के लिए सभी राजनीतिक दलों से सहयोग की अपील करता हूं।

श्री मोदी ने कहा कि मेरा मंत्र है-'सबका साथ, सबका विकास'। यह खोखले शब्द नहीं हैं। श्री मोदी ने कहा, 'यह मेरे वर्क कल्चर का डीएनए है।' मोदी ने कहा-देश की जनता ने 'ट्रिपल सेंचुरी' लगाई है। एनडीए को 300 से ज्यादा सीटें दी हैं। देश की जनता ने अपना फैसला सुना दिया है। हमें हिंदुस्तान को आगे ले जाना है। सवा सौ करोड़ हिंदुस्तानियों के सपने को पूरा करना है।

श्री मोदी ने कहा-देश के इतिहास में कांग्रेस के बाद पहली बार शुद्ध रूप से भाजपा की सरकार बनने वाली है। लोकसभा चुनावों में बड़ी जीत दर्ज करने के बाद अपने निर्वाचन क्षेत्र वडोदरा पहुंचे भाजपा के पीएम पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी ने कहा कि वडोदरा के लोगों ने पांच लाख 70 हजार से अधिक मतों से जिताकर एक इतिहास बनाया है।

श्री मोदी ने कहा, वडोदरा से नामांकन भरने के बाद मैं केवल यहां 50 मिनट दे पाया था लेकिन आप लोगों ने मुझे पांच लाख 70 हजार से अधिक वोटों से जीता दिया। आम चुनाव में इतने वाटों से कोई नहीं जीता। चुनाव इतिहास में यह एक रिकॉर्ड है। मैं यहां के लोगों का अभिनंदन करता हूं। मैं आप लोगों को प्रणाम करता हूं, आप लोगों ने बहुत बड़ी जिम्मेदारी निभायी है। मैं वडोदरा की जनता का सिर झुकाकर नमन करता हूं।

श्री मोदी ने कहा, वाराणसी ने मोदी के मौन पर मुहर लगा दी। मुझे बनारस में अपनी बात रखने का अवसर नहीं मिला लेकिन जिस तरह से बनारस के लोगों ने मेरे मौन पर मुहर लगाया है, यह इतिहास में दर्ज में होगा। श्री मोदी ने लोगों से पूछा कि आज का दिन कैसा लग रहा है। मोदी ने कहा, अच्छे दिन आने वाले हैं।

श्री मोदी ने कहा कि वह गुजरात की जनता के आभारी हैं जिन्होंने लोकसभा की सभी सीटें भाजपा को दे दीं। वडोदरा ने नया रिकश्वर्ड बनाया है। भाजपा नेता ने कहा कि निष्पक्ष मीडिया, चुनाव आयोग और निष्पक्ष एनजीओ ने मतदान के लिए जो अभियान चलाया मैं उसके लिए उनका अभिनंदन करता हूं। ■

ऐतिहासिक जीत से देश में खिला कमल : राजनाथ सिंह

16वीं लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत दर्ज करने वाली भाजपा ने पूर्ण बहुमत देने के लिए देशवासियों को बधाई दी है।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 16 मई को कहा कि देश की जनता ने भाजपा को जो जिम्मेदारी सौंपी है, वह बहुत बड़ी है। लोगों ने 30 साल के बाद किसी पार्टी को पहली बार पूर्ण बहुमत दिलाया है।

उन्होंने कहा कि लोगों ने अपार प्यार के साथ सभी बाधाओं को तोड़कर भाजपा को पूर्ण बहुमत दिलाया है। भाजपा ने श्री नरेंद्र मोदी को जो अपना पीएम पद का उम्मीदवार घोषित किया था, उसको लोगों ने अपना बहुमत दिया है।

उन्होंने कहा कि भारत के इतिहास में पहली बार है कि किसी नेता ने इतनी रैलियों और जनसभाएं कीं और लोगों का समर्थन हासिल किया। आज अटल बिहारी वाजपेयी का सपना पूरा हो गया है। अंधेरा छट गया है, पूरे देश में कमल खिल गया है।

उन्होंने कहा कि विरोधियों ने यह पूरी कोशिश की कि भाजपा अपने विकास के एजेंडे से विमुख हो जाए लेकिन ऐसा नहीं हुआ। लोगों ने मोदी के विकास के एजेंडे को अपना बहुमत दिया है। भारत की सफलता की कहानी लिखने का समय आ गया है। भाजपा की जो ऐतिहाकसिक विजय हुई है, उसके लिए वह अपने सभी कार्यकर्ताओं और नेताओं का अभिनंदन करना चाहते हैं। कई संगठनों ने भी भाजपा को यह जीत दिलाने में मदद की है, वह उनको भी धन्यवाद देते हैं।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भाजपा शहर ही नहीं, गांव, गरीब, आदिवासी, वनवासी, झुग्गी-झोपडियों में रहने वालों, गरीब, अमीर, सब धर्म, संप्रदाय, वर्ग के लोगों की पार्टी बन चुकी है। उन्होंने कहा कि इस ऐतिहासिक जीत में समर्थक किसी भी व्यक्ति या संप्रदाय के खिलाफ उत्तेजक भाषा का प्रयोग न करें।

उन्होंने इस जीत पर राजग के घटक दलो को भी बधाई दी। उन्होंने कहा कि भाजपा की यह प्राथमिकता है कि सभी वर्गों को साथ लेकर सबका विकास किया जाए।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि नकारात्मक एजेंडा लेकर इतनी बड़ी सफलता नहीं मिल सकती है। नरेंद्र मोदी के गुजरात मश्वडल और अन्य भाजपा सरकारों के सुशासन के कारण ही भाजपा को इतनी बड़ी जीत मिली है। जिन राजनीतिक दलों का सहयोग लेकर भाजपा ने चुनाव लड़ा है, उन सभी को कैबिनेट में जगह मिलेगी।

उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक राजनीतिक अवधारणा को लेकर भाजपा ने राजनीति की शुरूआत की थी, भाजपा किसी को डरा कर समर्थन नहीं लेना चाहती, लोगों से प्यार से उनके दिल में उतर कर समर्थन लेने में विश्वास रखती है। देश को चलाने के लिए सभी के सहयोग की जरूरत होगी। ■